जगदीश सिंह दफौटी
jagdishdafauti75@gmail.com

विद्यालय में लोकतांत्रिक प्रकिया

सार

यह लेख स्कूल द्वारा राष्ट्रीय मूल्यों पर आस्था रखने वाले नागरिकों के निर्माण के बारे में चर्चा करता है और दो महत्त्वपूर्ण बिन्दु उठाता है। एक तो यह कि शिक्षकों की मूल्यों के निर्माण में अहम् भूमिका है। न सिर्फ उन्हें उन मौकों का ध्यान रखना चाहिए जहाँ महत्वपूर्ण मूल्यों पर विमर्श का मौका हो वरन् उन्हें अपने व्यवहार में भी इन मूल्यों को शामिल करना है। लेख स्कूल में होशियार बच्चों व अन्य बच्चों के साथ किए गए व्यवहार, पुरस्कार व शाबाशी की संस्कृति और इनके सभी बच्चों पर हो रहे प्रभाव कि ओर भी ध्यान दिलाता है।

पृष्ठभूमि

एन सी एफ द्वारा निर्धारित शिक्षा के उद्देश्यों में मूल्य शिक्षा का उल्लेख प्रमुख रूप से किया गया है और इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि मूल्य शिक्षा को अलग से न देख कर शिक्षण प्रक्रिया का ही हिस्सा बनाया जाए। साथ ही पांचवें मार्गदर्शी सिद्धान्त में भी राष्ट्रीय मूल्यों में आस्था रखने वाले नागरिकों के निर्माण की बात कही गयी है। इन बातों से अध्यापक की ज़िम्मेदारी ज्यादा बढ़ जाती है, अपेक्षा यह है कि वे शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं में मूल्य शिक्षा के अवसर तलाशें। प्राथमिक स्तर पर राष्ट्रीय मूल्य समानता, स्वतंत्रता, न्याय, राष्ट्रीय महत्व, पर्यावरण के प्रति संवेदनशीता जैसे मूल्यों को समझने के लिए विशेष प्रयास करने होंगे। इस क्रम में सबसे पहले तो शिक्षक को स्वयं इन मूल्यों की समझ विकसित करने की आवश्यकता है। सुबह की सभा से लेकर कक्षा शिक्षण, मिड-डे-मील, खेल गतिविधियां, बच्चों से होने वाली औपचारिक व अनौपचारिक बातचीत उनका सहज अवलोकन व इसके साथ-साथ मूल्यांकन प्रक्रिया में भी इन बातों पर ध्यान देना होगा। एक शिक्षक के रूप में मुझे लगता है कि हमें सोच समझ कर सभी प्रक्रियाओं में मूल्यों को लाने की ज़रूरत है। जैसे जैसे बच्चे व शिक्षक इन प्रक्रियाओं से गुज़रते हैं, नए अनुभव मिलते हैं तो शिक्षण प्रक्रियाओं में अपेक्षित परिवर्तन सम्भव हो पाता है। प्रैक्टिकल के साथ साथ सैद्धांतिक समझ भी विकसित होती है।

अनुभवों का दायरा :

मेरे अनुभव में कई ऐसे उदाहरण हैं जो अलग-अलग पहलूओं को बखूबी उभारते हैं। कई बार हम इन पहलूओं को देख कर भी अनदेखा कर देते हैं। या फिर हम वही देखना व समझना चाहते हैं जो हमें अच्छा लगता है।

इसका अनुभव मुझे अपने विद्यालय में हुआ। मैं सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण में प्रतिभाग करने बी आर सी गया। एकल अध्यापक होने के कारण समीपवर्ती विद्यालय से मेरे स्थान पर वैकल्पिक अध्यापक साथी की व्यवस्था की गई। छः दिवसीय प्रशिक्षण के बाद जब विद्यालय लौटा तो बच्चों की कुछ शिकायतें थी। विद्यालय में बच्चों द्वारा छोटे छोटे गमलो में फूल एवं पौधे लगाये गए हैं। जिन को सुरक्षा की दृष्टि से नियमित रूप से शाम को कक्ष में रखा जाता है। प्रातः बाहर बरामदे में रखा जाता है। जिन को अंदर बाहर रखने में सावधानी बरतने के निर्देश व भाषण लगभग रोज ही दिए जाते हैं। जैसे एक-एक ले जाओ। हिलाना नहीं गिरना नहीं आदि। यह कार्य विगत दो वर्षो से चल रहा था। मेरा पूरा विश्वास था कि मेरे बच्चे पर्यावरण की सुरक्षा के प्रति संवेदनशील बन रहे हैं। मैं गर्व से इन गमलों को उगाने के उद्देश्य लोगों को समझाता। मेरा दावा था कम से कम ये बच्चे दूसरों के लगाये गमलों व पौधों को क्षति तो नहीं पहुचायेंगे।

लेकिन शिकायतों में सबसे पहली शिकायत यह थी कि मेरी अनुपस्थित में कुछ बच्चों द्वारा गमलों को लात मार कर इधर उधर फैंका गया। विद्यालय में प्रार्थना सभा शुरू हुई। देशभक्ति गीत, समूह गीत राष्ट्रगान के तुरन्त बाद नारे जो रोज़ ही लगते हैं। देश की रक्षा कौन करेगा, हम करेंगे हम करेंगे। मेरे अंदर अपने शिक्षण के उद्देश्यों का पूरा न होना घुमड़ रहा था। बीच में ही रोकते हुए बोला बन्द करो ये सब, क्या देश की रक्षा करोगे तुम? अपने छोटे गमलों व पौधों की सुरक्षा नही कर पाये। देश की रक्षा का मतलब जानते हो? थोड़ी देर सोचा तो

पाया कि आखिर यह इसे जानेंगे कैसे? इस नारे पर तो इन से बात ही नहीं हुई है। फिर उन से बात की गयी। अपने आस पास की हर वस्तु की सुरक्षा ही देश की सुरक्षा है। वो हमारे घर, गांव विद्यालय कक्षा यहां तक कि अपनी कापी किताब पैंसिल की सुरक्षा भी देश की सुरक्षा है। इस को भी समझने की आवश्यकता है। पैंसिल व कागज़ बनाने में लकड़ी का उपयोग होता है। अगर हम अनावश्यक रूप से इसे बर्बाद करेंगे तो हम देश की ही क्षति कर रहे होते हैं। ये नारा तो वर्षों से सुन रहा था लेकिन अब तक बच्चों के बीच चर्चा में नही आया था। इस अनुभव से लगा कि देश, नागरिक, सुरक्षा, सेवा, काम, समूह गीत, देशभक्ति गीतों व नियमों के उद्देश्यों पर बातें होंनी आवश्यक हैं।

इस घटना के बाद भी मैं ये दावा नहीं कर सकता हूँ कि सभी बच्चे गमलों की सुरक्षा एक समान उद्देश्य से कर रहे थे। चाहे वे शिकायत करने वाले बच्चे ही क्यों न हों। शिकायत करने के पीछे खुद को अध्यापक का करीबी जताना भी हो सकता है जो कि एक तरह से अलोकतांत्रिक मूल्य है। आज समाज में अक्सर देखने को मिलता कुछ लोग हैसियत और उम्र में अपने से बड़ों का करीबी बनने के लिए कई तरह की जुगत लगाते हैं और वे करीबी भी बन जाते हैं जिस के चलते कई बार सही प्रतिभा का दमन भी हो जाता है। इस के अतिरिक्त थोपा गया अनुशासन भी ज़िम्मेदार हो सकता है। जिस के कारण अवसर मिलते ही बच्चों द्वारा उस कार्य के प्रति अपनी नाराज़गी प्रदर्शित की गयी। ये सब बातें ही हैं जिनके कारण गमले या पौधों को सुरक्षा के लिए कमरे में रखना पड़ता हैं। क्योकि छुट्टी के बाद हमारे समाज के लोग उन पौधों को क्षति पहुँचाते हैं। जिन फूलों व पौधों को बाहर होना चाहिए था वो अंदर हैं। देश की रक्षा तन से करेंगे, मन से करेंगे, धन से करेंगे का दावा है लेकिन व्यवहार में यह नहीं दिखता। इस के बाद भी देश व पर्यावरण के प्रति कुछ लोगों की ज़िम्मेदारी के भाव को नकारा नहीं जा सकता है।

स्कूल का काम, पर्यावरण की देखभाल कौन करेगा?

ऐसा ही एक अनुभव 26 जनवरी को हुआ। संविधान के 69 वें जन्म दिवस को धूम-धाम से मनाने के बाद बच्चे पास के इंटर कालेज में अपने कार्यक्रम प्रस्तुत करने चले गए। विद्यालय के कार्यक्रम स्थल में कुर्सी टेबल चटाइयां बिछी पड़ी हैं। आफिस एवं अन्य कक्षा कक्षों के खिड़की दरवाज़े खुले हैं। अन्य दिनों ये सब कार्य बच्चे अपने अपने विभागों के अनुसार करते थे। आज कार्यक्रम के कारण उन्हें छोड़ कर जाना पड़ा। सारा कार्य अध्यापक एवं भोजन माताओं के सिर पर आ गया जिस कारण भोजन माताएं तो बड़बड़ाती हुई काम में लगी। अध्यापक जो कल तक चटाई की सलीके से तह चाहता था उसे भी पता चला की चटाई की तह लगाना कार्य है। कुर्सी टेबलों में भार होता है। खिड़कियां दरवाज़े बन्द करना एवं ताला लगाने में भी ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

अक्सर हम लोकतांत्रिक प्रकियाओं पर चर्चाएं करते हैं। विद्यालय स्तर पर मूल्यों को विकसित करने की बात भी उसमें शामिल रहती है। लेकिन कई बार कार्यविभाजन के समय में स्वयं को अलग कर लेता हूँ। कार्य का विभाजन केवल बच्चों में करता हूँ जैसे विद्यालयी कार्य, सफाई, झाड़ू लगाना, कुर्सी मेज अन्दर बाहर रखना, अपनी कुर्सी साफ करना, कार्यालय या कक्षों की सफाई, बागवानी, फूलों में पानी देना, खुदाई करना, पुस्तकालय की देखरेख करना, टॉयलेट सफाई आदि कार्यों का विभाजन छात्रों में किया जाता है। स्वयं निरीक्षक की भूमिका में रहता हूँ। इस के पीछे मेरा तर्क है कि मैं बच्चों में उक्त मूल्य विकसित करने के लिए उन से चर्चा करने के बाद कार्य विभाजन करता हूँ। इस बात का भी ध्यान रखा जाता है, कि कार्य बदलते रहेंगे। लेकिन ये भूल जाता हूँ कि मेरी भूमिका क्या है? मेरा केवल निरीक्षक की भूमिका में होना इस प्रक्रिया को कब अलोकतांत्रिक बना गया मुझे पता ही नहीं चला। इस से जो मूल्य बच्चों में विकसित होने थे उसके विपरीत मूल्य विकसित हो रहे हैं। जैसे दूसरों से कार्य करवाना, जिम्मेदारी खुद लेने से बचना।

शिक्षा पर जब भी चर्चा होती है तो अध्यापक को एक रोल मॉडल के रूप में देखा जाता है। इस बात को सभी शिक्षाविद् स्वीकार करते हैं। लेकिन विद्यालय में मेरे द्वारा अपनाई गई उक्त प्रक्रियाओं में तो मेरा रोल बहुत कम था। जिससे मॉडल का भी वैसा ही बनना स्वाभाविक है। यानि कहा जा सकता है कि दोहरा चरित्र व असंवेदनशीलता जैसे मूल्यों के पीछे भी लोकतांत्रिक मूल्यों का आभाव छिपा है।

इनके पीछे के कारणो की पड़ताल करने पर यह पाया कि अपने लिए नियमों में शिथिलता व दूसरों के लिए शक्त होना। खुद आदेश देने की भूमिका में रहना। जिस का सीधा प्रभाव बच्चों में दिखता है। वे अपने से छोटी कक्षा के बच्चों को निर्देशित करते नजर आते हैं।

इस के अतिरिक्त सुन्दर सुसज्जित कार्यालय में कीमती कुर्सियां व मेज, फ़र्श पर बिछी मैट, खिड़कियों के पर्दे, मेज़पोश, कुशन युक्त फर्नीचर, पानी की बोतलें, चाय के लिए स्पेशल कप, अलग टायलट आदि। दूसरी ओर बच्चों के लिए

जूट की चटाई गद्ढे युक्त पर्स आदि का होना। भोजन अलग अपने कार्यालय में करना, थाली गिलास स्वयं साफ़ न करना आदि। जबकि विद्यालय एक ही है अंतर केवल शारीरिक शक्ति व उम्र का है। ये प्रक्रियाएं भी अलोकतांत्रिक व शायद चरित्र निर्माण के दावे को खोखला करने वाली हों।

अगली प्रकिया और भी जटिल है। वह भाषा व व्यवहार है। जो जीवन का प्रमुख अंग है। बच्चों की ढेरों ग़लतियां हमें दिखती है। जबकि ग़लती वही करेगा जो सीखने की प्रक्रिया में होगा। लेकिन अधिकतम के समाधान सुझाने की भूमिका में होने के कारण ग़लती के स्तर के अनुसार व्यवहार में परिवर्तन आ जाता है। उसी के अनुसार आवाज का बढ़ना व भाषा में कटुता या उपहास का होना ख़तरनाक व अलोकतांत्रिक है।

आगे चल कर ये भेद भाव घर परिवार समाज में देखने को मिलता है। परिवार के मुखिया या पुरुषों को पहले भोजन देना। उनके कपड़े व कमरे को स्वच्छ रखना। कार्यों के विभाजन में अंतर व घर में हर व्यक्ति के लिए अलग नियमो का होना, इस के अनेक उदाहरण मिलते हैं।

कक्षा में जब भी किसी विषय पर बात होती है तो स्वभाविक प्रक्रिया में कुछ प्रश्न किये जाते हैं। इन प्रश्नों के उत्तर कुछ बच्चे तपाक से दे डालते हैं। उन्हें शाबाशी भी मिलती है। बाकी बच्चे भी उस का उत्तर सोच रहे होते हैं। तब तक उस का पड़ोसी उत्तर दे चुका होता है।

क्या होशियार बच्चों का उत्साह अन्य को सीखने से रोकता है

जब कोई बच्चे हमारी कक्षा में बढ़-चढ़ कर जवाब देते हैं तो बहुत अच्छा लगता है। हम बाकी बच्चों को कहते हैं कि इसे देखो कितना अच्छा है इससे सीखो। उसका उन बाकी बच्चों पर क्या प्रभाव पड़ता है यह हम नहीं ध्यान रखते। मुझे यह बात बहुत बाद में समझ आई। और मेरे सामने एक सवाल छोड़ गई।

मेरे स्कूल में कक्षा 2 के छात्र मानस, दीपक का अनुभव लेकर बात को आगे बढा रहा हूँ। जब भी गणित पर कुछ बातें होती हैं तो दीपक खुश हो जाता है। यों कहिये कि गणित सुनते ही वो ज़्यादा सक्रिय हो जाता है। मानस सहम सा जाता है। जब कि मेरे अनुसार हिन्दी एवं अंग्रेजी विषय में मानस की ज़बरदस्त पकड़ है। जहां तक उस की रचनात्मकता पर बात करें तो किसी भी बिंदु पर अपनी बात रख पाता है। एक बार सुनी कहानी को ख़ुद सुना सकता है। अपने स्तर की कहानी कविता भी रच लेता है। जो भी उससे मिलता है। प्रभावित हो जाता है। कहा जा सकता है कल्पना करना, चीज़ों को खुद की नजर से देखना या सोचना, अनुमान लगाना, तर्क करना, वस्तुओं का आपस में सम्बन्ध स्थापित करना बहुत से गणितीय कौशल विकसित हैं। फिर भी गणित की बात आते ही उस के हाव भावो का बदलना सोचने को मजबूर करता है।

इस घटना पर ध्यान दिया तो पाया कि कक्षा कक्ष में गणित शिक्षण में भारी गड़बड़ी है। अक्सर जब भी गणित का कोई प्रश्न पूछा जा रहा होता है, प्रश्न हल करने को दिया जाता है। दूसरा बच्चा दीपक जल्दी उत्तर दे देता है या प्रश्न को लिखित हल कर लेता है। जिस के कारण उसे बहुत अच्छा, होशियार जैसे शब्दों से अलंकृत किया जाता है। निश्चित रूप से उसका आत्म विश्वास बढ़ रहा है। विषय के प्रति रूचि बढ़ रही है। लेकिन उसके साथी पर उसका विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। पहला यह कि दीपक अन्य बच्चों को अपने अनुभव सुनाने के अवसर नहीं दे रहा है। वह दूसरे बच्चों के सोचने से पहले उत्तर दे कर बात समाप्त कर देता है। जिसके चलते दूसरे अनुमान लगाने व समस्या समाधान के लिये सोच नही पा रहे हैं। इस के लिए मेरे द्वारा ही उसके सही उत्तरों को प्रोत्साहित किया जाता रहा है। लेकिन इस के विपरीत प्रभाव से अन्य बच्चों के अवसरों पर हस्तक्षेप हो रहा है, मैं इसे समझ नहीं पा रहा था। इसका अर्थ ये नहीं लगाया जा सकता है कि प्रोत्साहित करना ग़लत है। लेकिन प्रोत्साहन से दूसरे के हित प्रभावित न हों। यह समझना शायद आवश्यक होगा।

दूसरी बात दीपक के अन्य साथियो ने सोचना छोड़ दिया। जो दीपक बताएगा उसे दोहरा देंगें या उसी का अनुसरण करेंगे। वे दीपक की बातों को अकाट्य सत्य समझने लगते हैं। यह मूल्य अन्य को अपनी बात रखने से रोक रहा है। क्योकि वे एक धारणा बना चुके हैं कि दीपक हमेशा सही बताता है। जो बहुत बड़ा मिथक है।

इस मिथक अवधारणा के चलते दीपक अन्य बच्चों को चुपके से उत्तर भी बताने लगा है। उस के एवज़ में वे अपने साथियों से कुछ वस्तुओं की सौदेबाज़ी कर रहा है। जैसे रबर पैंसिल या कोई खाने पीने की वस्तु जो उसे पसन्द है। यहाँ फिर मदद के रूप में कुछ लेने देने का मूल्य विकसित हो रहा है।

यही हाल मानस का हिन्दी या अंग्रेज़ी विषय में है। यहां मानस अन्य बच्चों के अवसरों को प्रभावित कर रहा है। अध्यापक का प्रिय बना है। हमेशा खुद ही जबाब देता है। अन्य बच्चों की बात (अभिव्यक्ति) को दबाने का कार्य कर रहा है। इस के चलते वह कई बार झूठी व मनगढ़ंत बातों को भी बढ़िया तरीके से बोल लेता है। क्योकि उसकी बातों को सुना जाता है इस लिए वह अपना प्रभाव और ज्यादा बनाने की कोशिश करता है।

यहां मेरे द्वारा यह समझने की कोशिश की गयी कि गणित व भाषा के उद्देश्यों को समझने की प्रकिया में शिक्षा के महत्वपूर्ण लोकतांत्रिक मूल्य के विपरीत कुछ आलोकतांत्रिक मूल्य कैसे विकसित होते हैं। जिन का मुझे पता ही नहीं चलता या देर हो जाती है। ये सब कक्ष में घटित घटनाएं होती हैं।

जिनका सीधा उदाहरण समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार में ज्यादा विकराल रूप में है। कई बार ऐसे उदाहरण भी समाज में मिलते हैं; लोग अपने विषय के विशेषज्ञ होते हैं; फिर भी भ्रष्टाचार में लिप्त मिलते हैं। इन के पीछे हो सकता है ये कारण भी रहते हों।

निष्कर्ष

इन सब उदाहरणों और ऐसे ही अन्य उदाहरणों से मुझे लगता है कि हम शिक्षकों को सोचने की जरूरत है कि हम अपने कार्य के ढ़ंग व सोच का स्वमूल्यांकन व विश्लेषण कैसे करें। यदि इस तरह के काम को शिक्षक शिक्षण प्रकियाओं का हिस्सा बनाया जाए और उनमें शिक्षक स्वमूल्यांकन व गतिविधियों का अवलोकन करें, तो इससे इस तरह के मसलों को ज़ेहन में रखने में मदद मिलेगी व मूल्यों को शिक्षण प्रक्रिया का हिस्सा बनाया जा सकता है। इस के लिए इस बात की ज़रूरत होगी कि एक शिक्षक के रूप में हमें अपनी प्रत्येक गतिविधि का शैक्षिक मूल्यों के संदर्भ में विश्लेषण करना होगा। शुरुआती दौर में परम्परागत व व्यवस्थागत दबाव रहता है और स्वयं को उन से बाहर निकालना असंभव सा लगता है। लेकिन जैसे जैसे हम इन प्रक्रियाओं में आगे बढ़ेंगे तो इन्हें बच्चों की भागीदारी और उन का साथ इन्हे संभव बनाने लग सकता है। ये प्रक्रियाएं शिक्षण को बेहतर बना सकती हैं और पूरे विद्यालय परिवार का नज़रिया बदल सकती हैं। इसमें धीरे-धीरे समाजिक एवं व्यवस्थागत अपेक्षित सहयोग भी मिलने लगता है। आज मैं जिस विद्यालय में हूँ उस विद्यालय में आने वाले सभी अधिकारी, शिक्षा कर्मी बच्चों के बीच बैठ कर खाना खाते हैं और अपनी प्लेट स्वयं धोते हैं। प्राथमिक स्तर पर मूल्यों के विकास की प्रक्रियाएँ और बातचीत बच्चों को जीवन पर्यन्त स्वअनुशासित, नैतिक व लोकतांत्रिक बना सकती है।